बी. ए. खण्ड - प्रथम / हिन्दी (प्र०) अध्ययन सामग्री

डा० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक : 07/04/2020

पत्र : द्वितीय / प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

कबीर का कवि परिचय

संत काव्यधारा के प्रवर्तक कबीर की प्रतिष्ठा एक महान समन्वयवादी विचारक और प्रतिभाशाली कवि के रूप में है। वे एक समाज-सुधारक, संत, युग-निर्माता, विद्रोही और आक्रमक व्यक्तित्व वाले जनहितैषी कवि थे। उनका आविर्भाव ऐसे समय में हुआ जब भारतीय समाज जाति-प्रथा, धार्मिक आडंबर, भोग-विलास, पंडित-मौलवियों के ढ़ोग आदि से ग्रसित था। समाज में विभिन्न प्रकार की विषमताएँ व्याप्त थी। ऐसे समय में उन्होंने समाज एक नई दिशा दिखलाई। वे हिन्दी-साहित्येतिहास में भक्तिकालीन निर्गुण शाखा के सर्वश्रेष्ठ संत एवं कवि के रूप में विख्यात हैं।

जीवन-परिचय

कबीर का जन्म लगभग ज्येठ सुदी पूर्णिमा, सोमवार विक्रम संवत् 1456 (1399 ई०) में हुआ था। इनके जन्म के संबंध में कई प्रवाद प्रचलित हैं। कहा जाता है कि उनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के कोख से हुआ था। जिसने लोक-लाज के भय से लहरतारा के तालाब के पास छोड़ दी। जिसे वहाँ से गुजर रहें नीमा और नीरू निःसंतान दंपति ने उसे घर लाकर पालन-पोषण किया। उन्होंन समाज में व्याप्त कुरीतियों, पाखण्डो और आडम्बरों पर चोट कर धर्म के सच्चे एवं सामान्य स्वरूप को उद्घाटित करने का सद्प्रयास किया। कबीर ने मगहर में जाकर अपना शरीर त्याग किया। इनका मृत्युकाल संवत् 1575 (1428 ई०) में मानी जाती है। इसके अनुसार इनकी आयु 120 वर्ष ठहरती है।

कबीर के काव्य में वर्णित दार्शनिक विचारधारा

कबीर संत एवं समाजसुधारक होने के साथ ही साथ एक दार्शनिक तत्ववेत्ता भी थे। जिनके काव्यों में /पदों में इसकी स्पष्ट छाप झलकती है। उनकी दार्शनिक विचारधारा उनके उपदेशों एवं वाणी में दिखती है। विद्वानों का ऐसा मत है कि उनका कोई स्थिर तात्विक सिद्धांत नहीं था। वे शायद समाज को पाखंडो और आडंबरो से मुक्त करने के लिए कभी भी किसी वाद या परंपरा का समर्थन नहीं किए। उनकी अपनी एक स्वतंत्र विचारधारा थी। वे रामानंद के शिष्य और सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। वे विभिन्न प्रकार के पुराणादि की शास्त्रीय मान्यताओं का निषेध कर स्वानुभूति भक्ति पर बल दिया। उन्होंने निर्गुण - सगुण से परे ब्रह्म की योग भक्तिमयी उपासना का दर्शन प्रस्तुत किया। उन्होंने अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, नाथ, सूफी मतो को ब्रह्म, जीव, माया और साधना संबंधी धारणाओं का समन्वय करते हुए सभी वर्गों और जनसाधारण के लिए सुलभ किया। उन्होंने जीवन के चिरंतन सत्य को सरल - सुबोध वाणी में प्रस्तुत कर उन्होंने धर्म-साधना में स्वानुभूति, प्रेम और आचरण की पवित्रता पर बल दिया। उनका सबसे बड़ा दर्शन प्रेम था उनकी भक्ति साधना कर्मकाण्ड पर आधारित न होकर मानसिक है जहाँ धर्म, सम्प्रदाय, जाति-पांत, ऊंच-नीच का कोई विभाजन नहीं है। वहाँ केवल प्रेम की प्रधानता है। वे कहते हैं- "बरस्या बादल प्रेम का, भीज गया सब अंग।

कबीर का सबसे अधिक महत्व इसमें है कि एक युगद्रष्टा और तत्वदर्शी कवि के रूप में उन्होंने स्वानुभूति पर आधारित प्रेम प्रधान भक्ति को सर्वसाधारण के लिए जनभाषा में प्रस्तुत कर भक्ति आंदोलन का मार्ग प्रस्तुत किया जो उस युग की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता थी।

कबीर की रचनाएँ 'कबीर परचई' में साखी, रमैनी के रूप में हैं जिनका संकलन उनके शिष्य अनंतदासजी ने किया है। 'बीजक' नाम से कबीर की रचनाओं का संग्रह कबीर पंथियों में में अत्यंत सम्माननीय है।